JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भूमण्डलीकरण की वास्तविकता

डॉ. हरदीप कौर

भूमण्डलीकरण दरअसल नवपूँजीवाद के तात्कालिक एकछत्र साम्राज्य की उद्घोशणा है, जिसके अन्तर्गत सारा विष्व एक बाजार में परिवत्तित हो रहा है। मनुश्य, मनुश्य की ओर प्रेम, स्नेह, आदर और सहिश्णुता से देखने के स्थान पर उपयोगितावादी दृश्टिकोण से देख रहा है। पैसा कमाना ही प्रमुख ध्येय रह गया है। सभी रिष्तेनाते पैसे की धूरी पर सिमटते नजर आते हैं। पैसा कमाने की ऐसी होड़–सी लग गई है कि मनुश्य आज मानवमूल्यों को भूलकर मुनाफा कमाने के लालच में दिनों–दिन फॅसता जा रहा है। जिस तरह से आज अनियोजित औद्योगिकरण और बाजारवृत्ति वाली बहुराश्ट्रीय संस्कृत्ति टेक्नोलॉजी के माध्यम से विकसित हो रही है, उसमें यन्त्रों की स्वतन्त्रता, मनुश्य की स्वतन्त्रता को सीमित करती जा रही है। इसने संचार क्रांति के जरिये हमारे घरों में घुसकर हमारे हृदय और मस्तिश्क पर अपना अधिकार कायम कर लिया है। जिसके परिणामस्वरूप मनुश्य की पुरानी मान्यताएँ, जीवन–मूल्य, सामाजिक सरोकार खंडित होते जा रहे हैं।

आज भूमण्डलीकरण के नाम पर जिस नये समाज और संस्कृति का ढॉचा गढ़ा जा रहा है, जिसमें विष्व या विष्वग्राम के भ्रम को बड़ी राजनीतिक तैयारी के साथ फैलाया जा रहा है। इसका नाम सुनते ही एक विचार हमारे मस्तिश्क में आना षुरू हो जाता है वह विचार है सूचना तन्त्र का सांझा होना। बाजार में चीज़ों का एक साथ प्रकट होना यानी सारा संसार साझी मण्डी बन जाना और इसका उद्देष्य है – मात्र लाभ कमाना, धन कमाना।

धन कमाने की होड़ में सत्य, विवेक, लोककल्याण की भावना पूरी तरह से विस्मृत हो गई है। इस तरह नवपूँजीवाद का जन्म हो रहा है किन्तु यह पूँजीवाद पुराने पूँजीवाद से भिन्न है। यह नवपूँजीवाद उपभोक्तावादी संस्कृति लेकर आता है, यह सेनाओं की सहायता लेकर देष की सीमाओं पर उपनिवेष कायम नहीं करता, वरन् कम्प्यूटर, ई–मेल, इन्टरनेट, टीवी चैनल आदि सूचनातन्त्रों की उन्नत तकनीक से चुपचाप हमारे घरों में घुसकर अपना साम्राज्य कायम कर लेता है। इसी के परिणामस्वरूप आज हम पर पाष्चात्य संस्कृति हावी होने लगी है। हम अपनी संस्कृति, धर्म, ईष्वर, सबको भूलकर पष्चिम संस्कृति की अंधी नकल करके अपने को षिक्षित मानने लगे हैं।

इसी के कारण समाज में असमानता बड़ी है, पूँजीपति वर्ग ज्यादा अमीर हुआ है तथा अन्य वर्ग आर्थिक रूप से पिछड़ गया है, जिसके कारण साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, अलगाववाद को बल मिला है क्योंकि वंचित–वर्ग इस बदलाव को अपने लिये बुरा मानता है जिसके कारण देष में किसानों की आत्महत्या, साम्प्रदायिक दंगे व महिलाओं पर अत्याचार जैसे अनेक मामले सामने आये हैं।

इतना ही नहीं, इस नई बाजारवादी व्यवस्था ने हमारे राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है, यहॉ तक की हमारी भाशा भी इससे अछूती नहीं रही। बाजार की भाशा के रूप में अंग्रेजी को ही स्थापित करके और मजबूत करने की कोषिष की जा रही है। हमारा रहन–सहन, खान–पीन, जीवन–षैली यहॉ तक की हमारी सोच भी उन्हीं की सोच को स्वीकार करके अपने–आपको भाग्यषाली समझने लग गई है। किन्तु सच्चाई यह है कि हमारे ही द्वारा साम्राज्यवाद की पुनर्स्थापना हो रही है। नया बाजार, तेज स्पर्धा, सूचना से मूल्य का निर्माण हो रहा है।

अपनी भाशा और संस्कृति को आधार बना कर अपनी राश्ट्रीय पहचान बनाना या कायम रखना आज के जमाने में पिछड़ापन लगता है। यह भ्रम भूमण्डलीकरण के कारण ही है, या इस तकनीकी क्रॉति का ही परिणाम है।

आये दिन विष्व में नया बाजार बहुराश्ट्रीय कम्पनियों के माध्यम से देखने को मिलता है। इन बहुराश्ट्रीय कम्पनियों के ही कारण परम्परागत अर्थव्यवस्था और उद्योग नश्ट हो रहे हैं। उद्योगों के नश्ट होने से देष में

दिन–प्रतिदिन गरीबी, बेरौजगारी और भूखमरी फैल रही है। पैसा और लाभ कमाने की होड़ में एक नई तरह की प्रतिस्पर्धात्मक संस्कृति से आपसी भाईचारा, जनहित, एकता, आत्मनिर्भरता सभी नश्ट हो रहे हैं। अपना समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, राजतन्त्र आदि को इस पूँजी की मुनाफाखौर प्रवृत्ति से बचाना बहुत कठिन है। इसने 'ग्लोबल विलेज' के नाम से मनुश्य की मुनश्यता को समाप्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

एक ओर सूचना क्रॉति के आगमन का डंका पीटा जा रहा है और दावा किया जा रहा है कि यह विष्व में परिवर्त्तनों का नया दौर षुरू करने जा रहा है, किन्तु सच्चाई यह है कि यह परिवर्त्तन सिर्फ हमारी जेब ढीली करवाते हैं, रोजाना नये–नये इलेक्ट्रानिक सामान हमारे घर में लाते हैं, किन्तु हमारा जीवन जो सदियों से किसी सकात्मक परिवर्त्तन का मोहताज है वो अतिरिक्त पैसा खर्च करके भी वैसा का वैसा ही है। इस सूचना क्रॉति ने समाज के जरूरतमन्द तबकों की आषा आकांक्षाओं पर पानी फेर दिया है। इसके माध्यम से लोगों को सूचनाएँ कम गलत सूचनाएँ ज्यादा मिल रही हैं। प्रतिस्पर्धा की दौड़ में गलत–सही, उपयोगी–अनुपयोगी और सार्थक–निरर्थक सब तरह की सूचनाएँ दर्षक और श्रोताओं तक पहुँच रही हैं। हॉ, ये सूचनाएँ केवल चन्द षासक तबकों की जरूरतों को ही पूरा कर सकती है।

इस सूचना प्रोधौगिकियों के दिनोंदिन बढ़ते उपयोग से विष्व में आर्थिक गतिविधि का 'बहुराश्ट्रीयकरण' भले ही तेजी से हो रहा हो, किन्तु राश्ट्रों की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृत्तिक क्षेत्रों में स्वतन्त्र निर्णय लेने की क्षमता लगातार कम हो रही है।

सूचना के सुपर हाईवे इन्टरनेट के माध्यम से भले ही चन्द सैकेंड में हमें पूरी दुनिया की खबर मिल रही हो परन्तु आज पड़ोस के बारे में अनभिज्ञ है। विषेशज्ञों के चन्द समूहों को भले ही इस सूचना हाईवे से उपयोगी जानकारियॉ प्राप्त हो रही हो किन्तु गरीबों के लिए इस सूचनातन्त्र में कोई स्थान नहीं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि राश्ट्रीयता के अभाव में अन्तर्राश्ट्रीयता की कल्पना निरर्थक है। जब तक हम अपने में राश्ट्रीय संस्कारों, मानवीय मूल्यों को नहीं पहचानेंगे, अपनी सोच को नहीं बदलेंगे, तब तक भूमण्डलीकरण के नाम पर षक्तिषाली षब्दों का मूक आक्रमण हम पर निरन्तर होता रहेगा और हम से हमारी ही पहचान खोने का खतरा बराबर बना रहेगा।